P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

पर्यावरण संरक्षण और अध्यापक

पुष्पा
सहायक प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
गौरी देवी राज. महिला महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति आम व्यक्ति को जागरूक करना है क्योंकि एक पढ़ा लिखा व्यक्ति तो किताबों, समाचरपत्रों, टी.वी. मीड़िया इत्यादि द्वारा सचेत रहता है परंतु साधारण व्यक्ति को उनके बच्चे पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करते है। अध्यापक द्वारा सिखाई गई आदतों को वह घर में माता–पिता, भाई–बहन सबके मध्य बताते है क्योंकि छात्र कोरी स्लेट होता है। उसके व्यक्तित्व पर अध्यापक की कही बातों, आदर्षो, नीतियों, व्यवहार आदि का प्रभाव ताउम्र रहता है। अतः प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण जैसे ज्वलंत विषय पर प्रकाष डाला गया है कि अध्यापक अपनी बातों, व्यवहार, क्रियाओं, शैक्षणिक व अशैक्षणिक गतिविधियों तथा सम्पूर्ण व्यक्तित्व द्वारा किस–किस प्रकार से छात्रों को पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने के लिए प्रेरित कर सकता है। यह बात सत्य है कि संस्कारों की नींव बालपन से ही पड़ती है। यदि हम प्रारंभ में ही बालकों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करें तो यह आदत बन जायेगी।

मुख्य शब्द : पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, संस्कार, परिवर्तन।

प्रस्तावना

तस्माद् गुरूं प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम्।
शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युयशमाश्रयम्।
(श्रीमद्भागवतपुराण 11.3.21)

श्रीमद्भागवत पुराण में स्पष्ट निर्देश है कि कल्याणार्थी जिज्ञासु शिष्य को ऐसे गुरू की शरण में जाना चाहिए, जो वेदशास्त्र में पारंगत हो और इनकी शिक्षा देने में समर्थ हो, ब्रह्मविद्या एवं तत्वज्ञान से युक्त हो तथा शान्तचित्त हो। शिक्षण जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें दो मुख्य आधार शिक्षक और शिष्य होते हैं। बालक का सर्वप्रथम गुरू माता होती है इसलिए कहा है – ''माता निर्माता भवति'' अर्थात् माता ही निर्माण करती है। माता के उपरांत गुरू अथवा अध्यापक का स्थान आता है। अज्ञानान्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले मार्गदर्शक को वेदों ने जन्म देने वाले माता–पिता से भी श्रेष्ठ माना है। गुरू पूर्णिमा का दिन समस्त लोगों के लिए पवित्र है। श्री ज्ञानेश्वर, रामदास, तुलसीदास, एकनाथ आदि प्रतिभा सम्राटों ने गुरू के चरणकमलों में जो श्रृद्धा सुमन अर्पित किये, वे भारतीय संस्कृति को चिरकाल से सुगन्धित करते आ रहे हैं और हमेशा करते रहेंगे। श्रीमदाद्यशंकराचार्य ने शत श्लोकीं में स्पष्ट किया है कि –

दृष्टान्तौ नैव दृष्टः त्रिभुवनजठरे सदगुरोज्ञार्नदातुः
स्पर्शश्चेतत्रकल्प्यः स नयति यदहो स्वर्णतामश्मसारं।
न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरणयुगे सदगुरूः स्वीयशिष्ये
स्वीयं साम्यं विधते भवति निरूपमः तेन व लौकिकोऽपि।।

अर्थात् ज्ञानप्रदाता सदगुरू के लिए समस्त त्रिभुवन में कोई उपमा नहीं दी जा सकती, यहाँ तक की पारसमणि की उपमा गुरू के लिए लागू नहीं होती क्योंकि पारसमणि तो लोहे को सोना बनाती है जबकि गुरू शिष्य को अपने जैसा बनाता हैं, इस दृष्टि से अध्यापक निरूपमेय हैं। बालक एक कोरी स्लेट होता है उस पर बालपन में दिये जाने वाले संस्कारों की अमिट छाप जीवनपर्यन्त बनी रहती है। गुरू अपने विद्यार्थियों में आचारों का आधान कर उसे समाज व देश का उपयोगी सदस्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गुरू अपने शिष्यों के समक्ष आदर्श को प्रस्तुत करें, उसका स्वयं का व्यवहार व चरित्र आदर्शमय होना चाहिए क्योंकि बालकों में अनुकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है जैसा गुरू बताते हैं उसे बिना किसी शंका के स्वीकार करने वाला ही विद्यार्थी होता है क्योंकि अध्यापक ही शिष्य को अज्ञान रूपी अंधकार से निकालने वाला, प्रकाश की ओर अग्रसर करने वाला होता है। अतः गुरू को अपने छात्रों के समक्ष

अच्छा आचरण करना चाहिए कि वह किन गुणों को अपने छात्रों में विकसित करना चाहता है, उन्हीं का आश्रय लेकर छात्रों को शिक्षा के साथ–साथ संस्कार भी सिखाये। बच्चों में अच्छी आदतों के विकास में अध्यापक की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है। अध्यापक के सद्चरित्र व व्यवहार से छात्र प्रभावित होकर उसी के अनुरूप स्वयं को ढ़ालते हैं इसीलिए पर्यावरण हम सबका है और अपनी धरोहर की रक्षा करना हम सबका दायित्व है। पर्यावरण चेतना का विकास कर पर्यावरण प्रदूषण पर लगाम लगाई जा सकती है।

पर्यावरण पंचतत्वों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) का समिश्रण है। इन पळचमहाभूतों में संतुलन पर्यावरण संरक्षण है तो दूसरी ओर इनमें असंतुलन ही पर्यावरण प्रदूषण है। हम सभी को पर्यावरण प्रदूषण को कम कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सकारात्मक प्रयास करने चाहिए। 'जल' हमारे जीवन का आधार है, जल के अभाव में जीवन असंभव है परन्तु जल के स्त्रोत सीमित है, प्रयोग असीमित, इसलिए हमें 'जल' का प्रयोग सजगता से करना चाहिए जिससे हमको व हमारी आने वाली पीढ़ियों को 'जल' मिल सके। समुद्रों में नमकीन जल का अथाह भंडार है परन्तु नमक होने के कारण वह हमारे किसी काम का नहीं है। अतः हमें पीने योग्य पानी को सहेजकर बुद्धिमता से प्रयोग करना होगा, जल की बर्बादी पर सख्ती से नियंत्रण लगाना होगा। जल की बर्बादी को नियंत्रित करने के लिए कानून बनाना चाहिए, जिससे अनमोल जल को व्यर्थ में बहाया न जाये। अध्यापक छात्रों को समझाए, जल कैसे हमारे लिए अनिवार्य तत्व है ? और हम किस प्रकार जल का प्रयोग करे, कि वह व्यर्थ न हो जिसके लिए अध्यापक छात्रों को कहानियाँ, कथा, नाटिका, फिल्म इत्यादि के माध्यम से जल की उपयोगिता को अच्छी तरह से समझाये जिससे कि वह जल का पूरी सतर्कता से प्रयोग करे और यदि उनके आस–पास कोई जल व्यर्थ में ही बहाता है, तो वह उसे बताये की जल हम सबके लिए प्राणस्वरूप है, अतः उसे व्यर्थ न करे। ऐसा करने से केवल उस छात्र में ही नहीं अपितु उसके परिवार, आसपास, आगे आने वाली पीढ़ियों में भी जल के सदुपयोग का ही गुण विकसित होगा।

पर्यावरण संरक्षण के लिए बालकों में ऐसी आदतों का विकास करे कि कचरा हमेशा कचरा–पात्र में ही डाले, कचरे को यूँ ही इधर–उधर न फैंके, कचरे के ढ़ेर नहीं लगाए क्योंकि यह कचरे के ढ़ेर घातक बिमारियों जैसे – मलेरिया, डेगूं, पीलिया, फेफड़ों की बिमारियां इत्यादि के घर है। कचरा हमेशा ढक कर रखना चाहिए जिससे उस पर मक्खियाँ न बैठे, क्योंकि यह मक्खी, मच्छर विविध बिमारियाँ फैलाते हैं। अध्यापक छात्रों को स्वच्छता की विशेषताओं को अच्छी तरह मन–मस्तिष्क में बिठा दे, कि स्वच्छता का नारा गाँधीजी ने दिया और हमारे प्रधानमंत्री जी ने इसे आगे बढ़ाया 'स्वच्छता भारत मिशन' के रूप में। गाँधी जी की जयन्ति पर भारत के प्रधानमंत्री द्वारा स्वच्छ भारत अभियान सम्पूर्ण भारत में चलाया जिसके अन्तर्गत हर गाँव, समाज, कार्यालय, स्कूल, सार्वजनिक स्थान जैसे – पार्क, गली, सड़कों आदि को साफ सुथरा बनाने के लिए सभी भारतवासियों को एकजुट होकर इस कार्य में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया, जिसमें बड़े नेता, राजनेता, नामी हस्तियों ने भी सहभागिता की। गुरू शिष्य को बताऐ कि गत 100 वर्षों में मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के लिए अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियाँ अर्जित की, सुख–सुविधाओं के साधनों में लगातार इजाफा हुआ, बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु औद्योगिक क्रान्ति का सहारा लिया तब से प्रकृति का वास्तविक स्वरूप विखण्डित होने लगा। वनों को साफ कर बड़ी–बड़ी इमारतें बनाई गई, कृषि योग्य भूमि की मात्रा में कटौती होती गई, बड़ी–बड़ी फैक्ट्रियाँ लगाई गई जिनमें से विषैला रसायन, गन्दा पानी स्त्रावित होकर नदियों में मिलने लगा जिसने नदियों के पानी को प्रदूषित किया। प्राकृतिक संसाधनों में कमी आने लगी, धीरे–धीरे उनकी अस्मिता पर संकट के काले बादल मंडराने लगे, जिसे हम पर्यावरण प्रदूषण के नाम से जानते हैं। अध्यापक बालकों को प्राकृतिक सम्पदा के संरक्षण की जानकारी अवश्य दे कि वन हमारी अमूल्य सम्पत्ति है, उन्हें अंधाधुंध कटाई कर नष्ट होने से बचाना हमारा नैतिक कर्तव्य है। इन वनों में बहुत से जीव–जन्तु निवास करते हैं। भारत एक जैव विविधता वाला देश है। जंगलों में रहने वाले जीव जन्तुओं का संरक्षण हमारा मौलिक दायित्व है क्योंकि यह जंगल उन जीव–जंतुओं का आश्रय स्थान है यदि यह जंगल साफ हो गये तो यह जीव कहाँ जायेंगे। अतः हमें इन जीवों के अस्तित्व की रक्षा करने के लिए वनों को मनुष्य की लालच की भेंट चढ़ने से रोकना होगा। बालकों में अध्यापक लोभ, लालच जैसे शत्रुओं के नाश के गुण को विकसित करने का प्रयास करे कि मनुष्य की लोभी प्रवृति ने ही जमीन की लालच में जंगल नष्ट किये हैं इसलिये हमें लालची प्रवृत्ति का त्याग कर वन्य जीव–जन्तुओं व वनस्पतियों को संरक्षण प्रदान करना चाहिए। पहले हम पढ़ते थे कि भारत के 80 प्रतिशत लोग कृषि करते हैं परन्तु आज वर्तमान परिस्थितियाँ बिल्कुल विपरीत है। लोगों को कृषि के लिए भूमि व साधन की कमी हो गई है। परिणामस्वरूप आज का किसान आत्महत्या कर रहा है क्योंकि यह बहुत से तत्वों के कारण हुआ है। किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, पानी, बीज, अन्य उपयोगी साधनों को क्रय करने के लिए धनराशि का अभाव है। 'मानसून का जुआ' कहीं जाने वाली भारतीय कृषि वर्षा के जल पर प्रायः निर्भर रहती है, मानसून चक्र गड़बड़ा गया है। समय पर आवश्यकता के अनुपात में वर्षा नहीं होती। परिणामस्वरूप फसल नष्ट हो जाती है और किसान की हालत बद से बदतर होती जा रही है। मानसून चक्र में परिवर्तन का मुख्य कारण है 'ग्लोबल वार्मिंग', जिसके कारण तापमान में लगातार वृद्धि सभी प्रकार के जीव–जन्तुओं, वनस्पति और मानव के लिए जीवन को संकट में डालने वाली भयावह स्थिति उत्पन्न हुई है। अतः छात्रों को पर्यावरण प्रदूषण किन–किन कारणों से हो रहा है और उसे कैसे रोका जाए इस विषय में विविध गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को ज्ञान करवाना अध्यापक की जिम्मेदारी होती है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

स्कूल में छात्र केवल किताबों का ही ज्ञान नहीं प्राप्त करता अपितु पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से जाने–अनजाने बहुत सी अच्छी बातों को ग्रहण भी करता है। छात्रों में काव्य पाठ प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, स्लोगन प्रतियोगिता, आशु भाषण प्रतियोगिता पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता इत्यादि के आयोजन पर पर्यावरण चेतना की दिशा में सकारात्मक सोच को विकसित कर सकता है। अध्यापक छात्रों के मध्य नाटक, लघु नाटिका, फिल्म, कठपुतली नृत्य दिखाकर उनके मन–मस्तिष्क पर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागृति उत्पन्न कर सकता है। इसके अतिरिक्त पर्यावरणविद् व समाज सेवी को बुलवाकर उनका विस्तार भाषण करवाकर भी छात्रों को पर्यावरण के प्रति सचेत कर सकता है। समय–समय पर विद्यालय व महाविद्यालयों में संचालित होने वाली प्रतियोगिताएँ जैसे – पोस्टर प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, वाद–विवाद, निबंध, स्लोगन प्रतियोगिता द्वारा भी बच्चों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक सोच को विकसित कर पर्यावरण के प्रति सचेत करना चाहिए। साथ ही साथ समय–समय पर आयोजित होने वाली विविध गतिविधियों के माध्यम से अध्यापक को छात्र में पर्यावरण के प्रति अपनत्व की भावना का विकास करना चाहिए।

पर्यटन

विद्यार्थियों को भ्रमण एवं पर्यटन के माध्यम से विशिष्ट स्थलों पर ले जाकर, प्रदूषणों के हानिकारक परिणामों को दृष्टान्तों के माध्यम से बताकर, प्रदूषण प्रभावित स्थानों का निरीक्षण करवाकर जिससे विद्यार्थी स्वयं अवलोकन कर प्रदूषण के हानिकारक तत्वों से परिचित हो गंभीर परिणामों को जान पायेंगे।

जनसंख्या नियंत्रण

जनसंख्या वृद्धि भारत के सीमित संसाधनों पर कुठाराघात है। अतः जनसंख्या नियंत्रण की दिशा में छात्रों में सकारात्मक सोच विकरित कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सराहनीय प्रयास है।

इकोलॉजी क्लब

इस कल्ब में पारिस्थितिकी से सम्बन्धित चाटर्स, मॉडल्स आशुरचित उपकरण, प्रदर्शन की अन्य सामग्री, साहित्य, फिल्म स्ट्रिप्स, सामाचार पत्र–पत्रिकाएँ आदि होती है। यह पर्यावरण शिक्षा से जुड़े शिक्षक द्वारा चलाया जाता है। इसके द्वारा पर्यावरण से सम्बन्धित साहित्य का ज्ञान, पर्यावरण संरक्षण का ज्ञान, पर्यावरण की उपयोगिता, अच्छे स्वास्थ्य, नवीन सूचनाएँ, पर्यावरण संरक्षण के विषय में रूचि बढ़ना आदि लाभ होते हैं। इसी प्रकार इकोलोजी प्रयोगशाला पर्यावरण से सम्बन्धित वस्तुओं का स्थल होता है जिसमें चाटर्स, पोस्टर्स, मॉडल, अन्य प्रदर्शन सामग्री होती है। जिसके द्वारा शिष्यों की पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, पोषण और स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी मिलती है।

पुस्तकालय

पुस्तकालय में विविध प्रकार के पर्यावरण प्रदूषणों के बारे में गहन जानकारी देने वाली उपयोगी पुस्तकें तथा इन प्रदूषणों से बचने के उपाय सम्बन्धित, पर्यावरण उपयोगिता सम्बन्धित साहित्य, पत्रिकाएँ, जर्नल्स, समाचार–पत्र इत्यादि का भी संग्रहण हो, जहाँ बैठकर छात्र उन्हें पढ़कर पर्यावरण के प्रति जागरूक हो सके।

सम्मेलन, संगोष्ठी वर्कशॉप

अध्यापक समय–समय पर पर्यावरण जागरूकता सम्बन्धित सेमिनार, संगोष्ठि, सम्मेलन व वर्कशॉप का भी आयोजन करवाएँ। जिसमें विविध विद्वान अपने–अपने पक्ष व मत से लोगों को रूबरू करवा सके और पर्यावरण प्रदूषण जैसे घातक मसले का हल मिल सके।

शोध कार्य

अध्यापक बड़ी कक्षाओं में स्नातकोत्तर व उसके उपरांत पर्यावरण से सम्बन्धित ज्वलंत विषयों पर शोध कार्य करवाये क्योंकि शोध कार्य द्वारा बहुत सारी समस्याओं से निजात मिल जाती है।

कृषि

अध्यापक छात्रों को केवल अन्धाधुंध भीड़ में शामिल होने से बचाये, उनमें ऐसी सोच विकसित करने जिससे वह स्वयं आत्मनिर्भर बन सके। अध्यापक छात्रों को नवीन तकनीक बताऐं जिससे वह ज्यादा से ज्यादा उत्पादन व कम से कम कीटनाशकों के प्रयोग से उन्नत प्रकार की खेती कर समाज व देश का सफल कृषक बन पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपना योगदान दे।

आदतों का विकास

पर्यावरण और हमारा अटूट सम्बन्ध है। पर्यावरण के अभाव में हमारा अस्तित्व नहीं रहेगा। अतः शिक्षक विद्यार्थियों में अच्छी आदतों के विकास को बढ़ावा देने के लिए विद्यार्थियों को छोटी–छोटी बातों से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में बढ़ा सकते हैं यथा –

विद्यार्थियों को कागज की उपयोगिता बताये कि लकड़ी की सर्वाधिक खपत कागज और लुगरी उद्योग में ही होती है, जिसे पूरा करने के लिए पेड़ों को काटना पड़ता है, पर्यावरण को नुकसान होता है। विद्यार्थियों में कागज का सदुपयोग की योग्यता का विकस कर, खाली पृष्ठ व्यर्थ न करे, भरी कॉपी रद्दी वाले को दे दे, जिससे कागज को रि–साइकिल किया जा सके और पेड़ों की रक्षा हो सके।

पौधरोपण करने व पौधों को सींचने, देखभाल करने की योग्यता का विकास क्योंकि जितनी अधिक हरियाली होगी, उतनी ही श्वास योग्य ऑक्सीजन मिलेगी, प्रदूषण पर लगाम लगेंगी।

पॉलीथीन भी पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए घातक है। पॉलीथीन में गर्म खाने–पीने की सामग्री जहाँ कैंसर जैसे घातक रोगों की जननी है वहीं दूसरी ओर यही पॉलीथीन नालियों में जाकर फँस जाती है, जानवर खा ले तो पेट में जम जाती है, जो उनके लिए जानलेवा सिद्ध होती है। प्लास्टिक कचरा सुरक्षित व निर्धारित स्थान पर डाले जिससे उसे रि–साइकिल किया जा सके। नीले कचरे पात्र में सूखा जबकि हरे कचरे पात्र में गीला कचरा डालने की आदत बनाये।

अध्यापक बालकों में बिजली व पानी की बचत की अच्छी आदत का भी विकास करे। व्यर्थ में पंखे, लाइट न जलाएँ, पानी व्यर्थ में न बहाये क्योंकि आज विज्ञान व टेक्नॉलोजी के युग में बिजली बिना कुछ नहीं है

और बिजली का निर्माण पानी से होता है और पानी सीमित मात्रा में है। अतः जो वस्तुएँ कम मात्रा में है उन्हें कैसे सावधानीपूर्वक सहजकर इस्तेमाल करना भी अध्यापक सिखाता है क्योंकि गुरू की बातों का बच्चों के मन–मस्तिष्क पर गहरी अमिट छाप रहती है।

आजकल वायु प्रदूषण भी लगातार बढ़ता जा रहा है। दीवाली के अवसर पर बच्चे पटाखे न चलाये, दीये जलाए जिससे पर्यावरण सुरक्षित व स्वास्थ्यवर्धक बनेगा। हम जिस वायु में साँस लेते हैं यदि वह ही विषैली होगी तो प्राणों की सुरक्षा कैसे होगी, इसलिए वायु प्रदूषण को रोकने के नवीन उपाय व तकनीक विद्यार्थियों की चिंतनशक्ति का विकास करने में भी सहायक है। ऊँची आवाज में लाउडस्पीकर बजना, शोर, गाड़ियों का शोरगुल यह भी नियत्रंण में ही होना चाहिए।

उपरोक्त बातों के अतिरिक्त और भी असंख्य छोटी–बड़ी बातें है जिसके द्वारा जाने–अनजाने में विद्यार्थी अपने शिक्षक से पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धित सीखता है, यह सभी बातें उसके जीवन व व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बनती है। अतः शिक्षक को सदैव अनुकरणीय आचरण करना चाहिए।

अध्ययन का उद्देश्य

पर्यावरण बिना जीवन की कल्पना करना असंभव हैं। आज पर्यावरण प्रदूषण के विष से बचने हेतु पर्यावरण की महती आवश्यकता है। अतः अध्यापक जो राष्ट्र निर्माता है, वह पर्यावरण संरक्षण में किस प्रकार अपना योगदान दे सकता है क्योंकि उसकी कही बात का विद्यार्थियों के मन–मस्तिष्क पर गहरा अमिट प्रभाव पड़ता हैं। प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से अध्यापक के कंधों पर कितना महत्वपूर्ण दायित्व है यह बताने का प्रयास किया है, जिसके द्वारा छात्रों में अधिक से अधिक जागरूकता व सजगता पर्यावरण संरक्षण के दिशा में विस्तारित की जा सकें।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति में गुरू की महिमा अद्वितीय है। वेद कहते हैं ''माता निर्माता भवति'' अर्थात् माता ही निर्माण करती है उसके पश्चात् गुरू का स्थान आता है। आचार्य अथवा गुरू बालक में संस्कारों का आधान कर उन्हें सकारात्मक दृष्टि से विस्तारित भी करता है। प्रारंभ से ही बालक गुरू अथवा अध्यापक का अनुसरण करता है। अतः गुरू का व्यक्तित्व अनुकरणीय होना चाहिए। उसकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए। गान्धी जी ने भी कहा है कि अध्यापक का चरित्र आदर्श होना चाहिए तभी वह आदर्श सिखा सकता है। आज हम वर्तमान संदर्भों पर विचार करते हैं तो पर्यावरण संरक्षण एक महत्वपूर्ण व सकारात्मक दृष्टिकोण है। बालक को कचरा कचरापात्र में डालने की आदत का विकास, अपनी वस्तुओं व खिलौनों को व्यवस्थित करके रखने का अभ्यास, पेड़–पौधो, जीव–जन्तुओं के प्रति अपनत्व की भावना को विकसित करना, ऊँची आवाज में गाने न बजाना, जल को सजगता से प्रयोग का अभ्यास इत्यादि कराने पर बालपन से प्रयास करना चाहिए क्योंकि अच्छे संस्कारों की नींव बचपन में ही डाली जाती है और जब वह देश के व्यस्क नागरिक बनते हैं तो पर्यावरण चेतना उनमें स्वयं ही विद्यमान होती है। वह उनके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बन जाता है। जिसका वह सही दिशा में प्रयोग कर देश के उपयोगी नागरिक बन जाते है। अध्यापक छात्रों में कहानी, गीत, नाटक, लघु नाटिका, चित्रकला, पोस्टर प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, शैक्षिक भ्रमण इत्यादि विविध पाठ्य सहगामी गतिविधियों के माध्यम से छात्रों में पर्यावरण चेतना का विकास कर छात्रों को पर्यावरण संरक्षण की ओर प्रेरित करता है। अध्यापक जैसा सिखाता है उसे विद्यार्थी तुरंत आत्मसात करते हैं। एक अध्यापक ही विद्यार्थी का जीवन गढ़ता है। शिक्षक अपने जीवन के अन्त तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है और इसीलिए शिक्षक को शिल्पकार कहा जाता है। बालक को पर्यावरण की उपयोगिता बताकर उस पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से उसे कैसे संरक्षित किया जाए अध्यापक बालकों को सीखा सकता है। उदाहरण के लिये – कुछ समय पहले दिल्ली में 'वायु प्रदूषण' की गंभीर समस्या के विषय में बताकर, समझाकर उसे प्रदूषण को दूर करने के लिए शिक्षित कर सकता है क्योंकि यदि हम पर्यावरण संरक्षण नहीं करेंगे, तो वह दिन दूर नहीं जब हमें ऑक्सीजन की कमी के कारण प्राण त्यागने पडेंगे। अतः समय रहते ही शिक्षक छात्रों को पर्यावरण संरक्षण की उपयोगिता, प्रदूषण के खतरे तथा प्रदूषण को दूर करने के उपाय बताकर देश निर्माण में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पौधारोपण द्वारा "Each one grow one" द्वारा बालकों में चेतना का संचार कर सकता है और भी असंख्य उपाय है कि जिन्हें अपनाकर अध्यापक स्वस्थ पर्यावरण का निर्माण कर सकता है।

अतः यह स्पष्ट है कि अध्यापक पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तभी तो उसे देवताओं के समकक्ष रखा गया है –

''गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरू देवोमहेश्वरा।
गुरूसाक्षात परब्रह्मं तस्मै श्री गुरवे नमः।।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

श्रीमद् भागवतपुराण 11.3.21
alpanadeshpande.blogspot.com
वर्मा, जी.एस. (2005) पर्यावरण अध्ययन, मेरठ : इंटनरेशनल पब्लिशिंग हाउस।
सक्सेना, के.के. एवं त्यागी, आर.के. (2006) पर्यावरण शिक्षा एवं आपदा प्रबन्धन, बुलंद शहर : अखिल प्रिंटिंग प्रेस।
कलाम, ए.पी.जे. (2007) शिक्षकों को रोल मॉडल बनाना चाहिए, नई दिल्ली : अमर उजाला, सितम्बर, 05
गोयल, एम.के. (2006) पर्यावरण शिक्षा, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, उत्तर प्रदेश।
कुमार, ए. (2007) स्मृति वृक्षारोपण, एक समाधान, प्रौढ़ शिक्षा जर्नल, नई दिल्ली : भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, अंक – 9–10, अप्रेल–मई।